पंचम अध्याय

शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

LIBRARY
Bhopal

अध्याय-पंचम

शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

किसी देश की गुणवत्ता वहाँ के नागरिकों की गुणवत्ता पर निर्भर है। नागरिकों की गुणवत्ता बहुत कुछ शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर है, तथा शिक्षा की गुणवत्ता प्राथमिक शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर है। स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षक के योगदान का सीधा संबंध सुयोग्य नागरिकता तथा राष्ट्र के विकास से है। वस्तुतः प्राथमिक शिक्षक एवं जीवन्त आदर्श तथा ज्ञानधारा का अजस् स्रोत है। शिक्षक ही छात्रों के विकास को सही दिशा प्रदान करता है अर्थात प्राथमिक शिक्षक छात्र–जीवन के विकास की नींव का पत्थर साबित होता है। नींव मजबूत होगी तो इमारत भी मजबूती से अपने स्थान पर अचल व अडिग खड़ी रहेगी। प्राथमिक शिक्षक की शुरूआत से छात्रों में सद्गुणों का समावेश शिक्षा के द्वारा करता है। और इसके परिणामस्वरूप एक अच्छा नागरिक राष्ट्र को प्रदान करता है। संक्षेप में शिक्षक मानवता का निर्माता व समाज का शिल्पी है। विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए योग्य शिक्षकों का होना आवश्यक है। क्योंकि संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की श्रृंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भारतीय समाज में गुरू का सर्वोच्च स्थान है, क्योंकि वह शिक्षा के माध्यम से समाज को विकासोन्मुख बनाता है। यह तभी संभव होगा जब अध्यापकों में मूल्यों का विकास हो। मूल्य मनुष्य के

अन्तरम में जाग्रति हुई शक्ति है। जो उसे एक विशिष्ट प्रकार से कर्म करने के लिए प्रेरित करती है, और उसके आचरण को शासित करती है। बच्चों के अंदर मूल्यों का संपूर्ण विकास हो इसके लिए शिक्षकों को प्रयास करना होगा। शासकीय स्तर पर चाहे कितनी ही मनोहर योजना बना ली जाये किन्तु अध्यापक यदि उसे ठीक ढंग से कार्यान्वित न करे तो यह योजना कदापि सफल नहीं हो सकती। इसलिए अध्यापकों में सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का होना अत्यंत आवश्यक है।

अतः छात्रों में व्यावहारिकता, अनुशासन व समाज के आदर्श मूल्यों के गिरते स्तर को रोकने हेतु प्राथमिक शिक्षा के स्तर से ही आमूलचूल परिवर्तन करना होगा और इस प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका प्राथमिक शिक्षक को ही निभानी है, इसलिए प्राथमिक शिक्षकों को अपनी शिक्षा प्रणाली को केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित न रखकर व्यावहारिकता संबंधी ज्ञान का समावेश भी करना होगा। वो तभी अपने विद्यार्थियों में आदर्श मूल्यों का निर्माण कर सकता है। जबकि उसका स्वयं का दृष्टिकोण मूल्य उन्मुख हो तथा वह स्वयं बुनियादी जीवन मूल्यों का सच्चाई से अनुसरण करता हो।

5.2 प्रस्तुत अध्ययन :-

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि गुजरात राज्य के पंचमहाल जिलो के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सैद्धांतिक, आर्थिक,

सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों के प्रति कितनी जागरूकता है।

5.3 समस्या कथन :-

''प्राथमिक विद्यालयेां के शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन''

5.4 अध्ययन के उद्देश्य :-

- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर मूल्येां का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में क्षेत्र के आधार पर मूल्यों का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में उम्र के आधार पर मूल्यों का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में विद्यालयों के प्रकार के आधार पर मूल्यों का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर मूल्यों का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में आय के आधार पर मूल्यों का अध्ययन करना।

5.5 परिकल्पनाएँ –

HO_1 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

HO_2 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में क्षेत्र के आधार पर मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

HO_3 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में उम्र के आधार पर मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

HO_4 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में विद्यालयों के आधार पर मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

HO_5 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

HO_6 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में आय के आधार पर मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

5.6 न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन में गुजरात राज्य के पंचमहाल जिलों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, तथा प्राइवेट स्कूलों के 121 शिक्षक–शिक्षिकायें प्राथमिक विद्यालयों से यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के

लिए चयनित किया गया है। जिसमें 81 शिक्षक एवं 40 शिक्षिकाओं को शामिल किया गया है।

5.7 उपकरण तथा तकनीक :-

उपकरण :-

एस.पी. आहलूवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक मूल्य परिसूची (T.V.I.) का उपयोग किया गया है।

तकनीक :-

उपरोक्त 121 शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन करने के लिए एस.पी. आहलूवालिया की शिक्षक मूल्य परिसूची का उपयोग किया गया। अंकों की गणना कुंजी की सहायाता से की गई। प्राप्त अंकों का मध्यमान एवं प्रमाणित विचलन निकालकर टी तथा एफ परीक्षण किया गया।

5.8 सांख्यिकीय विधियाँ :

इस अध्ययन में अध्ययनकर्ता ने प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए मध्यमान, प्रमाण विचलन, टी–टेस्ट एवं एफ टेस्ट का उपयोग किया है।

5.9 शोधकार्य में प्रयुक्त चर

आश्रित चर :-

1. सैद्धान्तिक मूल्य
4. सामाजिक मूल्य

2. आर्थिक मूल्य　　5. राजनैतिक मूल्य

3. सौन्दर्यात्मक मूल्य　　6. धार्मिक मूल्य

स्वतंत्र चर :-

1. लिंग　　2. क्षेत्र　　3. उम्र

4. विद्यालय के प्रकार　　5. अनुभव　　6. आय

5.10 मुख्य परिणाम :-

प्रस्तुत अध्ययन में शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया, जिनके आधार पर प्रदत्तों का विश्लेषण करके उनकी व्याख्या की गई। परिकल्पना के आधार पर जो निष्कर्ष सामने आये वे निम्न हैं।

1. लिंग के आधार पर सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में पुरूष शिक्षकों एवं स्त्री शिक्षकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2. क्षेत्र के आधार पर सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षक–शिक्षिकाओं में उपरोक्त छः मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

3. उम्र के आधार पर सामाजिक मूल्य में सार्थक अंतर पाया गया। विभिन्न उम्र वाले शिक्षकों में सामाजिक मूल्य का प्रभाव देखने को मिला। जबकि

सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में शिक्षकों की विभिन्न उम्र का प्रभाव देखने को नहीं मिला।

4. विद्यालयों के प्रकार के आधार पर सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः उपरोक्त छः मूल्यों का शिक्षक–शिक्षिकाओं में विद्यालयों के प्रकार का प्रभाव देखने को नहीं मिला।

5. अनुभव के आधार पर सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक, एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः उपरोक्त छः मूल्यों में शिक्षकों के विभिन्न अनुभव का प्रभाव देखने को नहीं मिला।

6. आय के आधार पर सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः उपरोक्त छः मूल्यों में शिक्षकों की विभिन्न आय का प्रभाव देखने को नहीं मिला।

5.11 सुझाव

प्रस्तुत शोधकार्य के अनुसार भावी शोधकार्य हेतु कुछ समस्यायें निम्न प्रकार की हो सकती है :

- प्राथमिक स्तर के अध्यापकों तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

- शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
- प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की अपने व्यवसाय के प्रति अभिवृतियों तथा उनके मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
- शहरी, ग्रामीण एवं आदिवासी विद्यालयों के शिक्षकों में मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
- ''डाईट'' जैसी संस्थाओं के शिक्षकों में मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
- माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में भी मूल्यों का अध्ययन।
- शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, अध्यापन प्रभावशीलता विद्यालय की असरकारकता पर मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- ''छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके मूल्यों पर प्रभाव'' का अध्ययन।

LIBRARY